टेंडरहार्ट हाई स्कूल, सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)
लेखक-आचार्य चतुरसेन
पुस्तक- नवतरंग-8
कहानी का शेष भाग (पृष्ठ-46, 47, 48)

सुप्रभात बच्चो! पाठ-6 का शेष भाग आपको 15.7.24 को भेजा जा रहा है।

राजकुमारी उस काली मूर्ति के समान व्यक्ति को अपने पिता द्वारा भेजा गया संदेशवाहक समझ रही थी। लेकिन उसे आश्चर्य तब हुआ जब उसने देखा- वह गुप्त द्वार की ओर न जाकर सिंह-द्वार की ओर जा रहा है। वह अवश्य ही शत्रु है, वह सतर्क हो गई और उसने बाण धनुष पर चढ़ाकर उसे ललकारा क्योंकि वह धोखे से किले में प्रवेश करना चाहता था। राजकुमारी उसके छल को समझ गई। शत्रु राजकुमारी को यह बताना चाहता था कि वह महाराज का संदेशवाहक है। महाराज विपत्ति में हैं। यह कहकर उसने राजकुमारी को धोखा देकर किले में शत्रु-दल को घुसपैठ करानी चाही। तभी राजकुमारी ने तीर छोड़ दिया जो शत्रु के कलेजे को पार करता हुआ निकल गया। राजकुमारी ने सीटी दी। दो सैनिक और उपस्थित हुए। राजकुमारी की आज्ञा पा रस्सी के सहारे उन्होंने नीचे जा मृत व्यक्ति को देखा जो शत्रु था और दूसरा शत्रु उसकी गठड़ी में बँधा था। यह देखकर राजकुमारी खुश हुई। इसके बाद वह प्रत्येक बुर्ज पर घूम-घूमकर प्रबंध और पहरे का निरीक्षण कर रही थी। पश्चिमी फाटक पर जाकर उसने देखा द्वार रक्षक द्वार पर न था। कुमारी ने पुकारकर पूछा- "यहाँ पहरे पर कौन है?" एक वृद्ध योद्धा ने आगे बढ़कर राजकुमारी को प्रणाम किया। उसने धीरे-से कुमारी के कान में कुछ कहा। वह हँसती हुई बोली- "ऐसा, ऐसा? अच्छा वे तुम्हें घूस देंगे,

DA. 15.7.24
PAGE No. 2

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

बाबा साहेब ?" "हाँ, बेटी, बूढ़ा योद्धा तनिक हँस दिया। उसने गाँठ से सोने की पोटली निकालकर कहा- "यह देखो इतना सोना है..."
"अच्छी बात है। ठहरो, हम उन्हें पागल बना देंगे। बाबाजी, तुम आधी रात को उनकी इच्छानुसार दरवार खोल देना।" वृद्ध भी हँसता हुआ सिर हिलाता चला गया।
दो बज गए थे। चंद्रमा की चाँदनी छिटक रही थी। कुछ आदमी दुर्ग की ओर छिपते-छिपाते आ रहे थे। उनका सरदार मलिक काफूर था। उसके पीछे सौ चुने हुए योद्धा थे। शत्रु का संकेत पाते ही दरवारपाल ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। विशाल फाटक खुल गया। मलिक काफूर ने मंद स्वर में वृद्ध दरवारपाल से कहा कि अब तुम हमें वायदे के अनुसार गुप्त रास्ते से दुर्ग के भीतरी महल में पहुँचा दो। राजपूत योद्धा ने कहा, "मैं वायदे का पक्का हूँ, मगर बाकी सोना तो दो।" राजपूत की बात सुनकर शत्रु सेनापति ने मुहरों की थैली उसके हाथ पर रख दी। राजपूत फाटक का ताला बंदकर चुपचाप प्राचीर की छाया में चला गया और लोमड़ी की तरह चक्कर खाकर कहीं गायब हो गया। अब यवन सैनिक, राजकुमारी तथा वृद्ध योद्धा दरवारा बनाए गए चक्रव्यूह में फँस गए, ना पीछे का रास्ता मिलता था ना आगे का। वास्तव में वे सब कैद हो गए थे और अपनी मूर्खता पर पछता रहे थे। मलिक काफूर दाँत पीस रहा था। राजकुमारी की सहेलियाँ शत्रुओं को कैद में देखकर हँस रही थीं मानो उन्होंने इतने सारे चूहों को चूहेदानी में फँसा लिया हो।
बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। जिनके उत्तर लिखने के लिए आप तीन मिनट का

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

अंतराल लेंगे। ——— आशा है आप सब ने अपनी अभ्यास-पुस्तिका निकाल ली होगी और लिखने के लिए तैयार होंगे।

प्रश्न 1. राजकुमारी को कैसे पता चला कि रात में चोरी-छिपे आना वाला व्यक्ति शत्रु है?
प्रश्न 2. दुर्ग में बाहर से रसद सामग्री आनी बंद क्यों हो गई थी?
प्रश्न 3. शत्रुओं ने दुर्ग पर विजय पाने के कौन-कौन से प्रयास किए?

बच्चो! अब आपका अंतराल का समय समाप्त हुआ। आशा है आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं -

उत्तर 1. जब राजकुमारी ने देखा कि कोई किले की ओर अग्रसर हो रहा है। उसने समझा, पिता का संदेशवाहक होगा, वह चुपचाप उसे देखती रही। शत्रु को वह तुरंत पहचान गई क्योंकि वह गुप्त द्वार की ओर न जाकर सिंह द्वार की ओर जा रहा था। इस प्रकार राजकुमारी को शत्रु का पता चला।

उत्तर 2. दुर्ग के बाहर यवन-सेना का घेरा था इसलिए खाद्य सामग्री बाहर से किले के अंदर आनी बंद हो गई।

उत्तर 3. शत्रुओं ने दुर्ग के पहरेदार को घूस देकर किले में घुस-कर उसपर अपना अधिकार जमाने की योजना बनाई थी। जो जाल शत्रुओं ने बुन रखा था वे उस जाल में स्वयं ही फँस गए। दूसरा प्रयास- शत्रु ने एक गठरी में सैनिक बाँधकर प्राचीर पर चढ़ने का प्रयास किया, जिसे राजकुमारी ने अपने बाण से मारकर उनकी योजना विफल कर दी।

Scanned with CamScanner

DATE 15.7.24
PAGE No. 4

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

बच्चो! अब हम पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं।
शत्रु सेना कैद तो कर ली गई थी परन्तु बाहर यवन-सैन्य ने दुर्ग को घेरा हुआ था। अब दुर्ग के अंदर खाद्य-सामग्री धीरे-धीरे समाप्त हो रही थी। राजपूत भूखों मर रहे थे। अन्न की कमी के कारण राजकुमारी का शरीर भी पीला पड़ गया था। उसके अंग शिथिल हो गए थे, पर नेत्रों का तेज़ वैसा ही था। उसे कैदियों के भोजन की बड़ी चिंता थी। अतः उसने मलिक काफूर के पास जाकर कहा- "यवन सेनापति, विवश हो गई हूँ मैं, क्योंकि दुर्ग में खाद्य-सामग्री बहुत कम बची है अतः ऐसी स्थिति में आपकी अतिथि-सेवा कैसे की जाए! अब कल से हम एक मुट्ठी अन्न लेंगे और आप लोगों को दो मुट्ठी अन्न उस समय तक मिलेगा जब तक कि अन्न दुर्ग में रहेगा। आगे ईश्वर मालिक है!" इस प्रकार अठारह सप्ताह बीत गए। अलाउद्दीन के गुप्तचर ने आकर उसे सलाम किया। सुलतान ने गुप्तचर से पूछा, "क्या राजकुमारी रत्नवती किला देने को तैयार हैं?" "नहीं, खुदाबंद, हाँ किसी तरकीब से किले के अंदर रसद पहुँच गई है। किला नौ महीने बीत जाने पर भी हाथ न आएगा। लेकिन अब पानी किसी भी तालाब में नहीं है। गुप्तचर ने सुलतान को यह खबर भी दी कि रत्नसिंह ने मालवे तक शाही सेना को खदेड़ दिया है।"

गुप्तचर की बात सुनकर अलाउद्दीन हक्का-बक्का रह गया और उसने राजा रत्नसिंह से संधि का प्रस्ताव भेजा। इधर राजकुमारी ने प्रभात के समय दुर्ग की प्राचीर पर खड़े होकर देखा, अलाउद्दीन की शाही सेना डेरे और डंडों को उखाड़कर लौटने की तैयारी कर रही है। महाराव रत्नसिंह विजयी राजपूतों के साथ दुर्ग की ओर आ रहे हैं।

(पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner

15.7.24

DATE
PAGE No. 5

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 6 जैसलमेर की राजकुमारी)

मंगल कलश सजे थे। बाजे बज रहे थे। विजय प्राप्ति के इस शुभ अवसर पर दुर्ग के प्रत्येक वीर को पुरस्कार मिल रहा था। मलिक काफूर महाराव रत्नसिंह के पास बगल में ही बैठे थे। महाराव ने मलिक काफूर से पूछा, खाँ साहिब, किले में मेरी गैरहाज़िरी में आपको तकलीफ़ और असुविधाएँ हुई होंगी। इसके लिए आप माफ़ करेंगे। युद्ध के नियम सख्त होते हैं, फिर किले पर भी मुसीबत आई थी, इसलिए अकेली रत्नवती से जो बन सका, उसने किया। काफूर ने महाराव को कहा - "महाराज, राजकुमारी तो पूजने लायक हैं। वह इनसान नहीं, फरिश्ता हैं। मैं जिंदगी भर उनकी मेहरबानी नहीं भूल सकता।"

महाराव रत्नसिंह ने एक बहुमूल्य सरपेच उन्हें दिया, और पान का बीड़ा देकर उन्हें विदा किया। महाराव और राजकुमारी के व्यवहार का मलिककाफूर पर गहरा प्रभाव पड़ा और वह भाव-विभोर हो गया। इस प्रकार हमारे देश की वीरांगनाओं ने देश का सिर गर्व से ऊँचा किया है।

मैं अब आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। तीन मिनट का समय लेकर आप इन प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न 1. राजकुमारी मलिक काफूर से क्या परामर्श करना चाहती थीं?

प्रश्न 2. अलाउद्दीन हैरान क्यों रह गया?

बच्चो! आपके अन्तराल का समय समाप्त हुआ। आशा है आपने इन प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे।

उत्तर 1. राजकुमारी मलिक काफूर से दुर्ग में खाद्य-सामग्री पर्याप्त न होने के विषय में परामर्श करना चाहती थी। बिना अन्न सामग्री के वह बंदी बने शत्रु को भोजन कैसे उपलब्ध कराती?

(पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner

DA. 15.7.24
PAGE No. 6

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

उत्तर-2. जब अलाउद्दीन ने सुना कि राजकुमारी ने अपनी चतुराई से खाद्य-सामग्री किले के अंदर भरपूर मँगा ली है और किले की ओर शत्रु आँख उठाकर भी नहीं देख सकता। साथ ही राजा रत्नसिंह ने उसकी सेना को खदेड़ दिया है, तो उसे बड़ी हैरानी हुई।

बच्चो! अब मैं पाठ में आए शब्दार्थ बताने जा रही हूँ जो इस प्रकार हैं -

शब्दार्थ:-

(1) विपत्ति - मुसीबत (2) चर - नौकर (3) कलेजा - हृदय (4) उपस्थित - मौजूद (5) मृत - मरा हुआ (6) यवन - यूनानी (7) प्रबंध - इंतज़ाम (8) निरीक्षण - देख - रेख, देखना (9) दरबार रक्षक - पहरेदार (10) वृद्ध - बूढ़ा, बुज़ुर्ग (11) योद्धा - युद्ध करने वाला (12) घूस - रिश्वत (13) तनिक - थोड़ा (14) छिटक - बिखरना (15) संकेत - इशारा (16) प्रतिज्ञा - प्रण (17) मंद स्वर - धीमी आवाज़ (18) धर दी - रख दी (19) चक्रव्यूह - चक्र के आकार में खड़ी सेना का होना (20) दाँत पीसना - क्रोध करना (21) शिथिल - ढीली, सुस्त (22) सैन्य - सेना (23) परामर्श - सलाह (24) विवश - मजबूर (25) संकोच - झेंप, हिचक (26) हिफ़ाजत - रक्षा (27) कोर्निस - सलाम, बंदगी (28) खुदाबंद - खुदा के बंदे (29) खदेड़ - दिया - बल से भगा देना (30) हतबुद्धि - जिसे यह न सूझे कि अब क्या करें, ठगे से रह जाना (31) संधि - मेल (32) प्रस्ताव - विचार, बात (33) प्रभात - सुबह, प्रातः (34) मंगल कलश - मांगलिक जल कलश (35) बगल - समीप (36) गैरहाज़िरी - अनुपस्थिति (37) फरिश्ता - देवदूत (38) ताज़िंदगी - ज़िंदगी भर (39) मेहरबानी - कृपा (40) सरपेंच - पगड़ी में लगाई जाने वाली जड़ाऊ कलगी, ज़रीदार गोटा (41) पान का बीड़ा - सम्मान करना।

(पृष्ठ-6)

Scanned with CamScanner

DATE 15.7.24
PAGE No. 7

कक्षा- आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

टिप्पणी:- सब बच्चे पाठ-6 को बार-बार पढ़ेंगे। शब्दों के अर्थ लिखेंगे और याद करेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य देने जा रही हूँ। इस कार्य को आप ध्यान से सुंदर लेख में लिखेंगे। यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ।

गृहकार्य:- पृष्ठ-48 पर दिए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में स्वयं लिखने का प्रयत्न करें। स्वाध्याय अति आवश्यक है। हिंदी के शब्दकोश से कोई 10 शब्द अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे और याद करेंगे।

समाप्त

(अंतिम पृष्ठ-7)

Scanned with CamScanner